लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 03 अंक 16 लखनऊ। सोमवार 09 से 15 जनवरी-2017

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

भीषण तूफानों से तबाह हो जाएगा 'न्यूयार्क' शहर!

लेखक डॉ. भरत राज सिंह

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

मनुष्य द्वारा तेजी से किए जा रहे प्राकृतिक सम्पदा के दोहन के फलस्वरूप उनके दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। पूरा विश्व पृथ्वी को तबाही से बचाने के लिए चिंतित है। हाल के वर्षों में आयी प्राकृतिक आपदाओं के दुष्परिणामों ने पर्यावरणविदों एवं वैज्ञानिकों के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी हैं। यदि यही हाल रहा तो एक दशक के भीतर अमेरिका स्थित न्यूयार्क शहर का अधिकांश भाग खत्म हो जाएगा। यह दावा स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंस लखनऊ के महानिदेशक डॉ. भरत राज सिंह एवं मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. ओंकार सिंह द्वारा ग्लोबल वार्मिंग इम्पैक्ट्स एण्ड फ्यूचर पर्सपेक्टिव्स किताब में 'स्टडी आफ इम्पैक्ट आफ ग्लोबल वार्मिंग ऑन क्लाइमेट चेंज' एवं 'क्लाइमेट चेंजः रियेलिटीज, इम्पैक्ट ओवर आइस कैप, सी लेवल एण्ड रिस्क' पुस्तक के अध्याय 'स्टडी एबाउट रियेलिटीज ऑफ क्लाइमेट चेंज' में किया गया है। इस पुस्तक में देश एवं विदेश के कई लेखकों के लेख सम्मिलित हैं। विदेशों में इन पुस्तकों की मांग बढ़ रही है तथा ग्लोबल वार्मिंग पर लिखी पुस्तक के कुछ भाग को अमेरिकी स्कूलों के पाठ्यक्रम की पुस्तक 'कैन ग्लेशियर एण्ड आइस मेल्ट बी रिवर्स' में अध्याय के रूप में भी सम्मिलित किया गया है।

इतिहास काल में भी 30 से 40 हजार वर्षों के पश्चात् जलवायु परिवर्तन पाये जाने की प्रमाणिकता है परन्तु अनियमित तापवृद्धि का उदाहरण नहीं मिलता। यदि ऐसा होता तो किसी भी पीढ़ी के लिए यह चुनौतीपूर्ण होता। वर्तमान में भूमण्डलीय तापमान वृद्धि का तात्पर्य यह है कि विश्वव्यापी तापमान में औसत वृद्धि का होना और इस तापमान वृद्धि का मूल कारण है, भूगर्भ के भण्डारों का दोहन, अनियन्त्रित मानवीय हस्तक्षेप एवं प्रकृति से छेड़छाड़ करना। इस कारण ही, जलवायु परिवर्तन हो रहा है तथा उससे उत्पन्न अप्रत्याशित घटनायें निश्चित रूप से हमारी भावी पीढ़ी के लिए एक अत्यन्त चुनौती होगी। मनुष्य द्वारा तेजी से किए जा रहे प्राकृतिक सम्पदा के दोहन के फलस्वरूप उनके दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। पूरा विश्व पृथ्वी को तबाही से बचाने के लिए चिंतित है। हाल के वर्षों में आयी प्राकृतिक आपदाओं के दुष्परिणामों ने पर्यावरणविदों एवं वैज्ञानिकों के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी हैं। यदि यही हाल रहा तो एक दशक के भीतर अमेरिका स्थित न्यूयार्क शहर का अधिकांश भाग खत्म हो जाएगा। यह दावा स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंस लखनऊ के महानिदेशक डॉ. भरत राज सिंह एवं मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. ओंकार सिंह द्वारा ग्लोबल वार्मिंग इम्पैक्ट्स एण्ड फ्यूचर पर्सपेक्टिव्स किताब में 'स्टडी आफ इम्पैक्ट आफ ग्लोबल वार्मिंग ऑन क्लाइमेट चेंज' एवं 'क्लाइमेट चेंजः रियेलिटीज, इम्पैक्ट ओवर आइस कैप, सी लेवल एण्ड रिस्क' पुस्तक के अध्याय 'स्टडी एबाउट रियेलिटीज ऑफ क्लाइमेट चेंज' में किया गया है। इस पुस्तक में देश एवं विदेश के कई लेखकों के लेख सम्मिलित हैं। विदेशों में इन पुस्तकों की मांग बढ़ रही है तथा ग्लोबल वार्मिंग पर लिखी पुस्तक के कुछ भाग को अमेरिकी स्कूलों के पाठ्यक्रम की पुस्तक 'कैन ग्लेशियर एण्ड आइस मेल्ट बी रिवर्स' में अध्याय के रूप में भी सम्मिलित किया गया है।

डॉ. भरत राज सिंह ने यह भी बताया कि ग्लोबल वार्मिंग पर लिखी गई पुस्तक को सितंबर 2012 में इंटेक प्रकाशन ने क्रोसिया से प्रकाशित किया था, जिसके उक्त अध्याय में यह जिक्र है कि यदि यही हालात रहे तो एक दशक में न्यूयार्क शहर का अधिकांश भाग जल में समाहित हो जाएगा।

31 अक्टूबर 2012 को अमेरिका में आए सैंडी तूफान में न्यूयार्क शहर का एक तिहाई निचला हिस्सा पानी में डूब गया। यह पुस्तक विश्व की सर्वाधिक बिकने वाली 10 पुस्तकों में शुमार है। इंटेक ने डॉ. भरत राज सिंह को 'क्लाइमेट चेंजः रियेलिटीज, इम्पैक्ट ओवर आइस कैप, सी लेवल एण्ड रिस्क' नामक पुस्तक के सम्पादन की जिम्मेदारी सौपी थी, जो जनवरी 2013 में बाजार में आ चुकी है। इस पुस्तक के अध्याय 'कैन ग्लेशियर एण्ड आइस मेल्ट बी रिवर्स' में डॉ. भरत राज सिंह एवं प्रो. ओंकार सिंह ने दावा किया है कि उत्तरी ध्रुव पर 45 लाख वर्ग किमी में आर्कटिक आच्छादित बर्फ चट्टानों में 16 सितम्बर 2012 के नासा के सेटेलाइट आंकड़ों के आधार पर एक तिहाई यानी 15 लाख वर्ग किमी पिघली हुई पाई गई। पुस्तक में किए गए दावे के मुताबिक आगामी दो दशक में आर्कटिक उत्तरी ध्रुव पर नाममात्र की ही बर्फ बचेगी। बर्फीली सिलापट, ग्लोबल वार्मिंग के कारण पिघलकर अटलांटिक महासागर में पहुंच रही है, जिससे भीषण शीतलहर, तूफान तथा उससे उत्पन्न आपदाएं विनाश का कारण बनेंगी। पूरे विश्व में मनुष्य द्वारा प्रतिवर्ष 30 से 40 हजार मिलियन कार्बनडाई आक्साइड का उत्सर्जन किया जा रहा है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ ही पृथ्वी का तापमान भी तेजी से बढ़ रहा है।

पिछले आठ लाख वर्षों में इतने अधिक मात्रा में कार्बनडाई आक्साइड का उत्सर्जन का रिकार्ड नहीं मिलता है। भारत वर्ष में भी हिमालय की पहाड़ियों पर पड़ रही बर्फबारी ग्लेशियर पर न रूककर मैदानी इलाकों में पहुंच रही है और इसी कारण सम्पूर्ण हिमांचल प्रदेश, दिल्ली राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश भी भीषण शीतलहर से प्रभावित है। डॉ. सिंह यह कहते हैं कि भारतवर्ष में भी आपदाओं के आने के संकेत को नकारा नहीं जा सकता है। उनका अनुमान है कि केदारनाथ जैसी विभीषिका ग्लोबल वार्मिंग का ही दुष्परिणाम है। यदि जल्द चेता नहीं गया तो इसकी पुनरावृत्ति हो सकती है और मानव जीवन के लिए खतरा उत्पन्न हो सकता है। वह कहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग के फलस्वरूप पथरीले पहाड़ी इलाकों में हरियाली, रेगिस्तान में बारिश के साथ ही अन्य प्राकृतिक बदलाव आने का कारण भले ही बन रहे हैं, लेकिन इसमें हैरानी की कोई बात नही है। डेढ़ लाख से पांच लाख वर्ष पूर्व दक्षिण ध्रुव पर पेड़-पौधों एवं जंगल आदि उपलब्ध थे। आस्ट्रेलिया में ग्लेशियर था। सहारा मरूस्थल में हरियाली और फूल पोधों से भरा हुआ था। हमें यह सोचना होगा कि रात में सोने के बाद सुबह जब हम उठने की सोचे तो पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व बरकार रहे।